केस स्टडी – 1 कृषि पर्यटन
यात्रा – कृषि पर्यटन वेंचर
लेखक : सरवणन राज और ज्योति टॉड

भारत/ पूर्वोत्तर क्षेत्र/ असम/ एस एस बोटानिकल्स/ समीर रंजन

पहल का विवरण –

उद्यम- समीर वर्ष 2005 से पूर्वोत्तर राज्यों में जैविक कृषि को प्रोत्साहित करते हुये सलाहकारी सेवाएँ प्रदान करते रहे हैं इस प्रकार उन्होंने लगभग 500 किसानों को जैविक खेती अपनाने हेतु प्रेरित किया है। जैविक उत्पादकों की आय में, वृद्धि करवाने के उद्धेश्य से उन्होंने 2010 में "यात्रा" नामक उद्यम का शुभारंभ किया। उनका पूरा प्रयास जैविक मॉडल कृषकों, आदर्श ग्रामों और कृषि पर्यटन के सृजन पर केन्द्रित है।

कृषि उद्यमी – बी एस सी (कृषि) तक पढ़ाई करने के तुरंत बाद समीर ने कॉर्पोरेट क्षेत्र में कदम रखा। परंतु 2003 में उन्होंने अपना खुद का उद्यम आरंभ करने के उद्धेश्य से नौकरी छोड़ दी। दो माह का ए सी व ए बी सी का प्रशिक्षण प्रपट करने के बाद उन्होंने रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन की प्रक्रिया आरंभ की। इस प्रक्रिया में उन्हें किसानों और आम लोगों का पूरा सहयोग मिला। वर्तमान में उनके उद्यम के तहत कई गतिविधियां चलाई जाती हैं जिनमें परामर्शक सेवा, जैविक कृषि तथा कृषि योग्य भूमि में इनपुट की आपूर्ति, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, कृषि पर्यटन और अन्य संबन्धित गतिविधियां शामिल हैं।

समीर का कार्यक्षेत्र, असम के ऊपरी भागों तथा पूर्वोत्तर राज्यों के कुछ इलाकों तक फैला है। इनके प्रयासों से लगभग 500 किसान लाभान्वित हो चुके हैं और 22 कर्मचारी उनके साथ काम कर रहे हैं।

"पूर्वोत्तर की ग्रामीण जनता कृषि पर्यटन से लाभनीव्त हो रही है।"

.....

समीर रंजन

चुनौतियाँ –

- उत्पादन की गिरावट के संबंध में किसानों की चिंता
- सुनियोजित आजीविका का अभाव
- कृषि आधारित उत्पादों का विपणन (मार्केटिंग)
- उद्यमशील कौशलों की कमी

समाधान –

- आदर्श ग्रामों और किसानों का सृजन
- ए जी ओ के साथ मिलकर काम करना
- बृहत्तम जैविक खेतों की स्थापना/ निर्माण
- एम एस डब्ल्यु के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण
- सोशल मीडिया का प्रयोग

परिणाम -

- स्व दीर्घकालिकता
- पूर्वोत्तर जैविक ब्रैंड
- 3000 स्कूली बच्चों कॉ कृषि उद्यमशीलता का प्रशिक्षण
- 5600 किसानों को न्यून लागत कृषि प्रणालियों का प्रशिक्षण
- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों और कार्यकर्ताओं का सहयोग

स्थापित उद्यम का विस्तृत विवरण

यह समूची पहल मॉडल किसानों, मॉडल ग्रामों तथा उन खेतों व किसानों हेतु कृषि पर्यटन आरंभ करने पर केन्द्रित है। इस पहल के तहत 10 कृषि पर्यटन स्थल विकसित किए जा चुके हैं, जिसके अंतर्गत 125 किसानों को सहयोग मिल रहा है। 10 युवाओं को सीधे तौर पर नियुक्त किया गया है, जबड्की अनेक युवा अप्रत्यक्ष रूप से इस परियोजना से जुड़े हैं। देश विदेश के कई पर्यटक इन कृषि पर्यटक स्थलों का दौरा कर उन किसानों की मेजबानी व आतिथ्य का आनंद उठाते हुये इन उद्यमों को प्रोत्साहित करते हैं। कृषि क्लीनिकों द्वारा किसानों को जैविक कृषि प्रणालियों एवं पर्यटन प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जाता है और कृषि पर्यटन उद्यमों को कार्यान्वित करने में किसानों की सहायता की जाती है। कई पर्यटक ग्रामीण भारत के प्राकृतिक सौदर्य का अनुभव करते हुये ग्रामीण फार्म हाउजों में विहार करने के इच्छुक होते हैं।

"यात्रा" पर्यटकों के लिए निर्मित एक सम्पूर्ण पैकेज है जहां वे जैविक चाय के बागानों में रहने का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, ग्रीन टी बना सकते हैं, चाय की पत्तियां तोड़ सकते हैं, बांस से बनी झोपड़ियों में रहने, बांस निर्मित नौकाओं में सैर, हल चलाने, बांस से निर्मित गांवों में रहने, किसानों के साथ कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट बनाने तथा पूर्वोत्तर से पारंपरिक खान पान और संस्कृति का पूरा लुत्फ उठा सकते हैं। इस पैकेज के तहत बड़ी जैविक डेयरी और फर्मा बागानों में काम करने का प्रावधान भी शामिल है। अधिकांश पर्यटक किसानों के बीच जाकर जैविक कृषि की आवश्यकता हेतु परामर्श भी देने लग जाते हैं, इसलिए वे एक उद्देश्य केडबल्यू तहत पर्यटन करते हैं। इसके अलावा इस पैकेज में बांस के गावों तथा असम के जंगलों में ट्रकिंग तथा भारत के "फॉरेस्ट मैन" पदमश्री जादव पेअंग से उनके वन में भेंट भी शामिल है। यात्रा द्वारा समय-समय पर स्कूली बच्चों को जैविक खेती से संबन्धित गतिविधियों से अवगत करवाया जाता है।

"यात्रा" कृषि पर्यटन का एक सम्पूर्ण पैकेज है जिसमें असम और नागालैंड के गांवों की सैर उस क्षेत्र जैविक किसानों से मुलाक़ात भी शामिल है। पूर्वोत्तर क्षेत्र फूलों व वनस्पति से भरपूर है और यहाँ के लोगों की संस्कृति, रहन-सहन और खान -पान की आदतें भी विविधतापूर्ण हैं। इस क्षेत्र की इन्हीं खूबियों के बलबूते यात्रा एग्री क्लीनिकों व किसान सदस्यों हेतु अधिक लाभ सुनिश्चित करने के साथ साथ उन्हें अपने जैविक उत्पादों की बिक्री के माध्यम भी उपलब्ध करवाता है।

पैकेज के संघटक है :

पनिटोला के गांधिआगाँव के वसंती जैविक चाय बागान में जैविक चाय पर्यटन

यात्रा पर्यटकों को एक सदस्य किसान सुरेश चेतिआ के स्वामित्व वाले इस खूबसूरत चाय बागान में ले जाते हैं। सुरेश चेतिआ को श्री समीर रंजन बोरदोलोई ने 2009 में जैविक चाय उत्पादन हेतु प्रशिक्षण दिया था। 2010 में इस खेत को बागान के रूप में विकसित किया गया। केनेडा, कोलंबिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य देशों के पर्यटकों ने इसका दौरा किया। सुबह उन्हें चाय की पत्तियाँ तोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया, दिन के समय ग्रीन टी बनाने तथा दोपहर को उन्हें उन लघु चाय उत्पादकों से मिलवाया गया जिन्होंने कृषि क्लीनिक के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। रात के समय पर्यटकों ने खेत में बने तालाब में नाइट फिशिंग तथा कैंप फायर का आनंद लिया। इच्छुक पर्यटकों ने आस पास के किसानों को जैविक खेती अपनाने हेतु प्रेरित किया।

मजुली बंबू गाँव

मजुली विश्व का विशालतम नदी द्वीप तथा सत्रों की भूमि है (वैष्णवों के मठों)। लाखों पर्यटक इस सुंदर द्वीप को देखने आते हैं। बेदा दत्ता नामक किसान की भागीदारी में कृषि क्लीनिक द्वारा बंबू गाँव विकसित किया। बांस (बंबू) का पौधा अत्यंत जलवायु के अनुकूल होता है, इसीलिए यात्रा मजुली के कलमा नामक एक सुदूर गाँव के किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास कर रहा है – जहां पर्यटक प्रकृति का भरपूर आनंद ले सकते हैं। यात्रा द्वारा पर्यटकों के रहने के लिए बास से कॉटेज बनवाए गए हैं। दिन के समय, बंबू विलेज जाने के अलावा पर्यटक भारत के "फॉरेस्ट मैन" पदमश्री जादव पेअंग द्वारा सृजित वन का भी आदिवासी खानपान और संस्कृति का लुत्फ उठाते हैं। यात्रीगण यहाँ की महिलाओं को भी कृषि क्लीनिक के तहत जैविक कृषि अपनाने हेतु उत्प्रेरित करते हैं।

जैविक फार्म जोरहाट

समीर रंजन बोरदोलोई और मुरलीधर गट्टानी ने मिलकर जोरहाट में एक विशाल ऑर्गेनिक फार्म विकसित किया। इस आधुनिक फार्म में 250 गायों का एक यूनिट 600 टन का वर्मीकोंपोस्टिंग उत्पादन यूनिट, जैविक वनस्पतियों की बागवानी, संरक्षित खेती एवं सघन बायो बेड्स आदि उपलब्ध हैं। इस फार्म में तीन सितारा सुविधाओं से युक्त कमरे उपलब्ध है तथा पर्यटकों के लिए दिन भर विभिन्न गतिविधियां चलती रहती हैं। यह फार्म देश भर के विभिन्न स्कूल के लिए शैक्षिक पर्यटक ग्रुपों का केंद्र है।

चराइमरी जैविक मॉडल ग्राम

इस गाँव के 12 ग्रामीण युवकों को प्रोत्साहित करके समीर रंजन बोरदोलोई ने इस मॉडल ग्राम को सृजित किया। जहां 70 घरेलू नौकर उनके बागानों में जैविक सब्जियाँ उगाते हैं और आगंतुक इस गाँव की सैर करते हुये डोयांग नदी के किनारे पिकनिक मानते हैं। इस गाँव की महिलाएं पारंपरिक फलों को संसाधित कर पर्यटकों को परोसती हैं। यह गाँव एक ऐसा उदाहरण है जो बिना किसी आर्थिक सहायता के मात्र किसानों को उत्प्रेरित कर कृषि संबंधी संसाधनों के आधार पर विकसित किया गया है।

काजीरंगा का धनसिरीमुख मॉडल ग्राम

काजीरंगा असम का दिल है। "यात्रा" पर्यटकों को असम की शान – "एक सींग वाला गेंडा दिखलाने ले जाते है और धनसिरीमुख मॉडल ग्राम में उन्हें ठहराते हैं।

चुनौतियां –

व्यवधान

- किसानों को अपनी खेती को जैविक कृषि के रूप में परिवर्तित करने में फसलों में गिरावट आने तथा आमदनी में कमी होने की आशंका रहती है।
- किसानों की आजीविका क्षेत्रीय प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर निर्धारित नहीं होती।
- कृषि उत्पादों का विपणन (मार्केटिंग) इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या हैं ।
- किसानों में उद्यमशील कौशलों का अभाव।
- वित्तीय सहयोग की कमी।

सबक

- बाजार आधारित विस्तार एवं किसानों के साथ निष्पक्ष व्यापार द्वारा न्यून वित्तीय निवेशों में ही व्यापार की बड़ी संभावनाएं उभरती हैं।
- किसानों की जोखिम लेने की क्षमता अत्यंत क्षीण होती है, अत: जब वे मिलजुल कर कृषि व्यापार में उतरते हैं तो श्रेष्ठ निष्पादन करते हैं।
- कृषि तथा कृषि पर्यटन में स्थानीय संसाधनों के प्रयोग से खेती की लागत में कमी आती है साथ ही, पर्यटकों को उचित दामों पर अपने उत्पादन बेचने के बावजूद सुनिश्चित लाभ भी मिलता है।
- कृषि पर्यटन से किसानों के उत्पादों/फसलों की बाजार में मांग बढ़ती है।
- सुनियोजित स्थानीय संसाधनों द्वारा किसानों के प्रयासों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलती हैं।

बाधाओं का निवारण

जैविक खेती सहित कृषि पर्यटन की शुरुआत से किसानों को बेहतर फायदा हो रहा है और अब देश के अन्य क्षेत्रों में भी इन्हीं मॉडलों को अपनाना आसान हो गया है। एक ही विचारधारा के लोगों को एक छत्र की नीचे लाने से निधियों की कमी की बाधा दूर होने लगी है और साथ ही कम समय में कई कार्य भी निष्पादित हो जाते हैं। सामुदायिक आधार पर निर्मित संगठनों द्वारा संसाधनों को संगठित किसानों के विकास के लिए संचालित करना आसान हो गया है।

समाधान –

पहल

- "फार्म प्रेनोर" नामक फ्लैगशिप कार्यक्रम के माध्यम से किसानों के बच्चों की प्रतिभागिता ; स्कूलों में प्रशिक्षण के जरिये बच्चों का विस्तार –एजेन्टों के रूप में प्रयोग ; यह एक गतिविधि आधारित कार्यक्रम है जो विशेषत: ग्रामीण असम के सरकारी स्कूलों के लिए बनाया गया है। इस कार्यक्रम को नॉर्थ ईस्ट सोशल इंपेक्ट अवार्ड 2015 से सम्मानित किया जा चुका है।
- मॉडल किसानों को निरंतर परामर्श देना और न्यून लागतवाली स्थानीय संसाधनों पर आधारित कृषि तकनीकों का विकास करना ।

- गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर कार्य करना और "फार्म 2 फूड फाउंडेशन" नामक एन जी ओ का गठन तथा किसानों को समूची मूल्य श्रृंखला का प्रशिक्षण ।
- पूर्वोत्तर भारत में बृहत्तम जैविक फार्म की स्थापना ।
- गुवाहाटी के टी ई एस एस व बास्को संस्थान के एम एस डब्ल्यू के छात्रों को अधिकाधिक गांवों को उत्प्रेरित करने के उद्धेश्य से प्रशिक्षण।
- सर्वप्रथम मॉडल जैविक किसानों का सृजन, फिर मॉडल ग्राम उसके बाद कृषि पर्यटन की शुरुआत ।
- मॉडल ग्रामों व सफलता गाथाओं का सृजन और उन्हें सरकारी योजनाओं द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करना।

व्यवधानों के समाधान हेतु नवप्रवर्तन

- कृषि पर्यटन की अवधारणा से किसानों की जैविक कृषि में प्रतिभागिता बढ़ी है क्योंकि इससे उनकी आय में भी सुधार हुआ है।
- स्थानीय संसाधनों के प्रयोग और उनके दीर्घकालिक इस्तेमाल से लागतों में भी कमी आई है। उदाहरण के लिए फार्मों में बांस के कॉटेजों के निर्माण से निमार्ग कार्यों में तेजी आने के साथ – साथ बाज़ारों में इनकी मांग भी बढ़ी है। अनेक देशज तकनीकों व लाभप्रद तकनीकों का विकास हो रहा है जैसे – बांस निर्मित इंटेसिव बेड्स, बांस के फ्रेम वाले संरक्षित कृषि के ढांचे, जड़ी बूटी से निर्मित कीटनाशन आदि। इनसे कृषक स्तर पर प्रतिभागिता में पर्याप्त वृद्धि हो रही है।
- कृषि पर्यटन द्वारा किसानों के लिए एक बाजार सृजित करने में सहायता प्राप्त हुई। इस प्रयास से हस्त निर्मित संसाधन तकनीकों के विकास में मदद मिली। संसाधित उत्पादों को पारंपरिक पैकेजिंग सामग्री (आवरणों) में पैक किया जाता है। हस्त निर्मित ग्रीन टी, रोसेला हर्बल टी, पोषक पौधों का सूखा चूर्ण सफलतापूर्वक बेचा जा रहा है यहाँ तक कि उसका निर्यात भी किया जा रहा है।
- फार्म प्रेनोर कार्यक्रम के माध्यम से भविष्य के फार्म और खाद्य उद्यमियों का निर्माण।
- मॉडल किसानों और किसान समूहों व उद्यमियों की आपसी भागीदारी वित्तीय संकट दूर हुआ।
- गतिविधियों के प्रचार के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल ।

परिणाम –

प्रभाव

- परियोजना से जुड़े किसानों द्वारा स्व दीर्घकालिकता की उपलब्धि।
- इन पहलों द्वारा पूर्वोत्तर के जैविक कृषि के तथा कृषि पर्यटन के क्षेत्र में कृषि उद्यमियों ने एक ब्रैंड के रूप में स्थापित किया।
- असम कृषि विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड में सदस्य के रूप में नियुक्ति।
- ए सी ए बी सी एक अच्छी आजीविका प्रदान करने के अलावा कृषि उद्यमियों को समाज में भरपूर सम्मान दिलवाने में सफल रहा।

निष्कर्ष

- इन प्रयासों के चलते, अनेक किसान एक दीर्घकालिक/सुनिश्चित आजीविका हासिल कर पा रहे हैं।
- 3000 से अधिक स्कूली बच्चों को कृषि उदयमशीलता का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- अब फार्म प्रेनोर कार्यक्रम को असम सरकार के असम सर्व शिक्षा अभियान के तहत सम्मिलित किया गया है।
- जोरहाट में किए गए प्रयास अब पूरे पूर्वोत्तर में फ़ैल चुके हैं इसलिए SPREND NE नामक एक संगठन की स्थापना की गई जिसके तहत, गुवाहाटी के समीप दीर्घकालिक कृषि एवं ग्रामीण विकास केंद्र के गठन की योजना बनाई गई है।
- इस प्रयास को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों से पर्याप्त सहयोग मिल रहा है। कई कार्यकर्ता इस पहल के सहयोग हेतु आगे आ रहे हैं।
- 2015 और 2016 में न्यून लागत वाली जैविक खेती की प्रणालियों में प्रशिक्षित 5600 किसानों ने 225 मॉडल किसानों, 3 मॉडल गांवों का सृजन किया और 5000 स्कूली बच्चों को न्यून दाम वाली कंपोस्टिंग और वर्मी कपोस्टिंग के प्रशिक्षण हेतु 150 फार्म प्रेनोर स्कूलों व 10 कृषि पर्यटक उद्यमों की स्थापना की।

उपसंहार –

किसानों के प्रति समर्पण भाव से सेवा के माध्यम से उन्हें स्व विकसित करने हेतु आगामी वर्षों में अधिकाधिक किसानों तक पहुँचना होगा। पूर्वोत्तर भरम में किसानों के विकास के लिए, कृषि पर्यटन मॉडल सबसे अच्छा तरीका है। स्थानीय संसाधनों, स्थानीय लोगों और स्थानीय संस्कृति के संयोग से पूर्वोत्तर ब्रैंड अंतर्राष्ट्रीय बन सकता है। मैनेज के एक कृषि उद्यमी के रूप में एक सफल मॉडल की रचना कर उसे सरकारी विस्तार तंत्र में शामिल करना होगा ताकि ग्रामीण युवाओं का शहरों की और पलायन रोका जा सके।

कृषि उद्यमी का नाम : समीर रंजन बोर्दलोई
पता : एस एस बोटानिकल्स न॰ 1 सोनरी गाँव, ताराजन, जोरहाट, असम
आयु : 44 वर्ष
शिक्षा : कृषि स्नातक
वार्षिक आय : 1करोड़
मोबाइल : +91-8486029583
ई मेल आई॰डी॰ : samirf2f@gmail.com
फेसबुक : samir.bordoloi.54

उद्धरण: सरवणन राज और ज्योति टॉड (2018). कृषि पर्यटन –यात्रा –कृषि पर्यटन वेंचर -केस स्टडी-1, अंक –1, कृषि उद्यमिता, मैनेज, हैदराबाद के साथ कृषि विस्तार एवं सलाहकारी सेवा के बहतरीन कार्य .